स्वयंसेवी संगठनों से स्त्रियों का विकास

समाज में वर्ग भेद और लिंग भेद के कारण जो असंतुलन पैदा हो गया है उसे कम करने की दिशा में आज अनेक स्वयंसेवी संगठन क्रियाशील हैं। महिला संगठनों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने स्त्रियों के विकास में काफी योगदान दिया है। ये संस्थाएं बाढ़ और सूखे से पीड़ित लोगों को राहत पहुंचाने के लिए शुरू की गई थीं, पर जल्दी ही उन्हें समझ में आ गया कि यदि वे सचमुच सहायता करना चाहती हैं तो सहायता का पूरा ढांचा बदलना होगा। लोगों को शिक्षा व जानकारी देनी होगी, उनकी आमदनी बढ़ाने के साधन व रोजगार जुटाने होंगे, उन्हें कर्जों की सुविधा दिलानी होगी।

आंध्र प्रदेश के विशाखापतनम जिले में सुश्री विध्या और कल्पना ने भगवतूला चेरिटेबिल ट्रस्ट (बी. सी. टी.) के कार्यों का अध्ययन किया। 1976 से शुरू हुई यह संस्था इस समय 50 गांवों में लगभग 60,000 लोगों के विकास कार्यों में लगी है। राहत कार्य से शुरू होकर उसकी गतिविधियां— पौधों की नर्सरी, बालवाड़ी, स्वास्थ्य-संबंधी कार्यक्रम, कार्यकर्त्ताओं की ट्रेनिंग, मछली पालन, पशु पालन तथा नमक उत्पादन आदि हैं।

योजना की सफलता का मूल लोगों को साथ लेकर चलना है। जल्दी ही यह बात भी सामने आई कि स्त्रियों को साथ लिए बिना विकास कार्यक्रम आगे नहीं बढ़ सकता। बदलाव चाहने वालों और लाने वालों, दोनों में स्त्रियां अधिक थीं, शायद इसलिए कि घर की ज़िम्मेदारियां उन पर कम हो गई थीं। महिला मंडलों की संख्या तेजी से बढ़ी। उन्होंने बचत और कर्ज-संबंधी व आमदनी बढ़ाने वाले कामों जैसे पशु-पालन, नमक उत्पादन, दूध की बिक्री आदि को तेजी से बढ़ाया।

आर्थिक कार्यक्रम

समूचे कार्यक्रम में यह बात उभरी कि (1) गरीब औरतें भी पैसा बचा सकती हैं। सीमा के अंदर वे कर्ज भी ले सकती हैं और चुका भी सकती हैं। (2) पुरुषों के योग्य समझे जाने वाले क्षेत्रों जैसे रुपये का खर्च, पूंजी लगाना आदि के बारे में भी स्त्रियों में फैसला लेने की क्षमता है। वे बचत के तरीके ढूंढ निकालती हैं। इनसे उनका अपने ऊपर भरोसा बढ़ा है। नमक उत्पादन का शुरू से आखीर तक बिक्री आदि का काम वे कर रही हैं। पौधों की नर्सरी तैयार कर वे धन कमा रही हैं। मेरीपेलम गांव में उन्होंने राशन की दुकान खुलवाई और अब चलाने का पूरा काम स्त्रियां कर रही हैं।

गांव में बिजली का बिल न भरने के कारण तीन साल पहले बिजली कट गई थी। उन्होंने अफसरों से मिलकर पैसा इकट्ठा कर बिलों का भुगतान किया और वे बिजली वापिस लाने में सफल हुईं। गांव पंचायत में 9 में से चार पदों पर उनका चुनाव हुआ। यह बात भी सामने आई कि वे जातपात से ऊपर उठकर अन्याय के खिलाफ लड़ सकती हैं।

अन्याय का विरोध

एक नाई के साथ ज्यादती हो रही थी। उसकी गैरहाजिरी में गांव वालों ने उसका घर ऊंची जाति के परिवार को दे दिया। जब नाई लौटा तब उच्च परिवार ने घर खाली नहीं किया। पंचायत ऊंची जात वालों के साथ थी, लेकिन महिला मंडल नाई को उसका घर दिलवाने में सफल हुआ। शुरू में पुरुषों, खासकर ऊंची जाति के पुरुषों ने काफी विरोध किया, पर स्त्रियां संगठित थीं, धीरे-धीरे गांव वालों की समझ में आया कि वे

गांव की भलाई के लिए काम कर रही हैं और लोगों ने उनकी बात मानी।

तामिलनाडू के किलवायत्तन कुघन गांव में विकास कार्यक्रम में गांव की औरतें संगठित हैं। वैलोर क्रिश्चियन मैडिकल कालेज द्वारा शुरू की गई 18 इकाइयों में काम कर रही हैं। वे गांव में पानी, बिजली, सड़कों पर रोशनी और स्वास्थ्य संबंधी बेहतर सेवाओं की मांग कर रही हैं। इस सबके अच्छे नतीजे निकले हैं। गर्भवती और नई मांओं को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं। बच्चों को बेहतर खाना मिलता है। अब पहले से ज्यादा लड़कियां स्कूल जा रही हैं। स्त्रियां प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग ले रही हैं। घर और बाहर सब जगह ज्यादा सफाई दिखाई देती है।

स्वास्थ्य शिविर

महाराष्ट्र की 'सेवा' संस्था देश के कई भागों में फैली है। एक शाखा 'सेवा रूरल' गुजरात के खड़िया जिले में दस साल से स्वास्थ्य केंद्र चला रही है। वह गांव की दाइयों को प्रशिक्षण देकर बेहतर सेवा देने योग्य बनाती है। स्वास्थ्य शिविरों में स्त्रियां, पुरुष और बच्चे सब भाग लेते हैं। गांव की औरतों को छोटे-छोटे उद्योग-धंधे खुलवाए हैं—जैसे पापड़, बड़ियां व अगरबत्तियां बनाना। खेतिहर मजदूरी करने वाली स्त्रियां घर पर रह कर किए जाने वाले कामों को अच्छा मानती हैं। उनका तेज़ गर्मी और बरसात से तो बचाव होता ही है, काम भी साल भर मिलता रहता है।

कलकत्ता के एक उप नगरीय इलाके में 'सीनी' (चाइल्ड इन नीड) संस्था महिला मंडलों की सहायता से गांव में स्वास्थ्य कार्यक्रम चला रही है। बालवाड़ी, ट्यूबवैल, स्कूल और सार्वजनिक स्थानों पर शौचालय बनाए जा रहे हैं। साथ ही खेती से जुड़े उद्योग-धंधे, जैसे मुड़ी (लैया), चटाई व रस्सी बनाने और फलों के पेड़ लगाने को बढ़ावा दिया जा रहा है। संचालक डाक्टर चौधरी का कहना है "घर और बाहर, दोनों जगहों पर काम का मुख्य भार औरतों पर है।"

'अवेयर' संस्था

यह संस्था आंध्र प्रदेश के तेलंगाना जिले में काम कर रही है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और जनजातीय समूहों को आर्थिक और सामाजिक दिशा में आगे बढ़ाने की प्रेरणा देना है। वे इतने जागरूक हो जाएं कि सहायता कार्यों का सही उपयोग कर सकें। सफलता का मापदंड यह नहीं है कि कितने ट्यूबवैल लगे या कितने स्कूल या स्वास्थ्य केंद्र खुले, बल्कि यह होना चाहिए कितने फी सदी लोग अपने पैरों पर खड़े हुए। कितने लोग अपनी समस्याओं का हल ढूंढ पाए। संस्था ने स्थानीय पढ़े-लिखे युवकों का जत्था तैयार किया है जो गांवों में स्वतंत्र रूप से विकास काम कर रहा है। 'अवेयर' संस्था उनके आगे नहीं पीछे खड़े होकर उनकी मदद करती है। नेतृत्व जनता करती है।

आत्म विश्वास जगाया

पाचौड़ में 1977 से 'समविष्ट स्वास्थ्य एवं विकास कार्यक्रम' चल रहे हैं। इनका नारा 'सबके लिए स्वास्थ्य नहीं', 'सबके द्वारा स्वास्थ्य' है। पहले यहां स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं को दाई का प्रशिक्षण देने की योजना बनी थी, पर जल्दी ही समझ में आ गया कि गांव की दाइयों को ही प्रशिक्षण देकर अच्छी सेवा योग्य बनाना चाहिए। गांववाले उन्हीं पर भरोसा करते हैं और उन पर निर्भर भी हैं। यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा। इससे दाइयों का काम तो बेहतर हुआ ही, उनकी खुद की सोच में फर्क और व्यक्तित्व में निखार आ गया। वे जातपात के भेदभाव को भूल सकीं। उनमें से कुछ स्थानीय नेता बन गईं।

40 वर्षीय गंगूबाई दाई का काम करती थी। उसके पांच बच्चे थे। पति शराब पीकर मारपीट करता था। प्रशिक्षण के दौरान गंगूबाई सबसे अच्छी दाई साबित हुई। इससे उसका अपने ऊपर भरोसा इतना बढ़ा कि वह गांव वालों की मुखिया बन गई। घर में भी उसी की चलती है। आज गंगूबाई जब काम पर जाती है तब उसका पति घर में रहकर बच्चों की देखभाल करता है।

पाचौड़ में अब 42 प्रशिक्षित दाइयां हैं जो 42 गांवों में करीब 50,000 लोगों को सेवा दे रही हैं। पहले वे 6 फी सदी बच्चे जनवाती थीं, आज 80 फी सदी बच्चे इन्हीं के हाथों पैदा होते हैं।

मध्य प्रदेश के बस्तर जिले के आसना गांव में सरकार ने निस्तारी जंगल काटने का काम शुरू कराया। उसे रोकने के लिए स्त्रियां आगे बढ़ीं। धरना देकर और अफसरों से मिलकर वे निस्तारी जंगल को बचाने में सफल हो सकीं। अब वहां कौन से पेड़ लगने चाहिएं, इस बारे में वे सलाह देती हैं।

कमाई के धंधे

पंजाब और केरल में महिला मंडल बालवाड़ी, परिवार नियोजन और खाद्य सामग्री की बिक्री कार्यक्रम सफलता पूर्वक चला रहे हैं। पंजाब में स्त्रियां 2,000 बालवाड़ी चला रही हैं। कुछ महिला मंडलों ने शादी और अन्य उत्सवों के लिए ठेके पर शामियाने, फर्नीचर, बर्तन, भोजन आदि का प्रबन्ध किया है। वे सिलाई, बुनाई, खिलौने बनाना, साबुन और नील उत्पादन, क्राफ्ट केंद्र आदि आमदनी बढ़ाने वाले काम भी कर रही हैं।

बंगलौर में 'आस्त्रा' संस्था के मार्गदर्शन में स्त्रियां पेड़ लगाती हैं, इससे उनकी ईंधन की समस्या का हल निकलेगा। महाराष्ट्र में 'एफप्रो' संस्था लोगों को ज्यादा पेड़ लगाने और अनाज उपजाने का प्रोत्साहन दे रही है।

जहां-जहां महिला मंडल सक्रिय हैं औरतें न केवल स्वास्थ्य और सफाई की ओर जागरूक हुई हैं, वे अपनी कमजोर हालत के प्रति भी जागरूक हुई हैं। वे सोचने लगी हैं कि वे अपनी दशा में सुधार ला सकती हैं। मांओं और बच्चों की मृत्युदर में कमी आई है। रहन-सहन का स्तर सुधरा है। औरतें विकास की ओर कदम बढ़ा चुकी हैं।

आज देश के कोने-कोने में स्वयंसेवी संस्थाएं जुटी हैं। सरकारी कार्यक्रमों और जनता के बीच महत्वपूर्ण कड़ी बनकर वे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

महिला मंडल औरतों की समस्याओं को भले ही हल न कर पाएं पर उनकी समस्याओं को उभारने, उन्हें नए ढंग से सोचने, उनमें भरोसा पैदा करने, उन्हें उनका महत्व समझाने और उन्हें संगठन की ताकत का एहसास कराने के काम तो कर ही रहे हैं।

यह बात साफ है कि गांव की गरीब स्त्रियां

ग्रामीण औरतों की लड़ाई

15 फरवरी, 1990 को महाराष्ट्र के सांगली जिले के गांवों की 400 तलाकशुदा व पति द्वारा छोड़ी औरतों ने जिला कलक्टरेट के सामने धरना दिया। उनकी मांगें थीं :

1. बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा और होस्टल की सुविधा।
2. गुजारे भत्ते के लिए चल रहे मुकदमों का जल्दी फैसला।
3. उन्हें मुफ्त कानूनी सहायता।
4. सरकार उन्हें भी कुटुंब के मुखिया के रूप में माने।
5. सरकारी कार्यक्रमों में उन्हें कर्ज, स्वरोजगार और पेंशन मिलने में प्राथमिकता दी जाए।

अगले दिन 16 फरवरी की रात को धरना उठाया गया जब कलेक्टर ने उनकी कुछ मांगों को माना। कलेक्टर राजी हुए कि गांव की गौशाला की जमीन में औरतों को प्लाट दिए जाएं। जिन औरतों को ससुराल में कोई आर्थिक सहायता नहीं मिल रही है, उन्हें कुटुंब के मुखिया का दर्जा दिया जाए। उन्हें राशन कार्ड दिए जाएं और उन्हें सरकारी योजनाओं में प्राथमिकता दी जाए।

स्त्रियां हर स्तर पर लड़ाई लड़ रही हैं। महिला मंडलों की आश्चर्यजनक बढ़ोतरी हुई है। गुजारा-भत्ता न देने के फलस्वरूप महाराष्ट्र में कई पतियों को जेल की हवा खानी पड़ी है।

एक रपट

सेवा मंदिर, उदयपुर ने गिरवा क्षेत्र में स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का एक कार्यक्रम बनाया जो बहुत सफल रहा। उन्होंने 7 मुख्य मुद्दों को लेकर काम शुरू किया।

1. किसी एक गांव को लेकर समुदाय में सफाई अभियान के लिए सभा बुलाई।
2. घर और पशुओं के रहने की जगह को साफ करने को कहा गया। इसमें फर्श की लिपाई-पुताई भी शामिल थी। घर के आसपास की सफाई भी करने को कहा गया।
3. खाद के लिए गड्ढे खुदवाकर सारा गोबर और मल तथा रसोई का कूड़ा आदि डालने का काम।
4. पीने का साफ पानी मिले इस विषय में हर संभव कदम।
5. घर के पास एक छोटा सब्जी का बगीचा जिससे कि घर का बचा, इस्तेमाल किया हुआ पानी साग-सब्जी, फल उगाने के काम में आए।
6. रोग निरोधक टीके आदि लगवाना।
7. सफाई अभियान के बीच-बीच में सभा बुलाना जिससे कि काम के बारे में खबर मिल सके।

उन्होंने 6 गांवों में बरसात के बाद तीन महीने यह काम करवाया और इन सभी कामों को सफलता पूर्वक किया गया।

पूरे सफाई अभियान में स्त्रियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही और यह अनुभव किया गया कि बिना उनके सहयोग के कार्यक्रम को सफलता नहीं मिल सकती थी। यह भी अनुभव किया गया कि समाज को बदलने में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। विकास के हर कार्यक्रम में उन्हें शामिल किया जाना जरूरी है।

गरीबी, अशिक्षा, अज्ञानता और बीमारी को उनके जीवन से हटाने के लिए सबकी सोच में बदलाव की जरूरत है। इन सबके लिए उन्हें काफी कोशिश करनी होगी। कारणों को समझकर हल का तरीका ढूंढना होगा। इसमें स्वयंसेवी संस्थाएं काफी सहायक हो सकती हैं।

अपनी स्थिति से बहुत असंतुष्ट हैं। बदलाव लाने को तो वे उत्सुक हैं ही, काफी कुछ करने को भी तैयार हैं। वे शिक्षा और कमाई, कमाई और अपनी ताकत के बीच रिश्ते को समझने लगी हैं। यह बात दूसरी है कि उनके आर्थिक स्तर को ऊंचा होने में समय लगेगा।

संगठन जरूरी

बिना संगठित हुए स्त्रियां घर और समाज में अपनी स्थिति नहीं सुधार सकेंगी। महिला संगठन उन्हें सहारा और सहानुभूति दे रहे हैं।
हमारे सामाजिक ढांचे में ब्याह के बाद औरतें अपने परिवार वालों से कटकर अलग हो जाती हैं और उनकी स्थिति असहाय सी हो जाती है जिसके फलस्वरूप समाज में असंतुलन पैदा हो गया है। स्त्रियों की जिम्मेदारियों का पलड़ा बहुत भारी है और हक उनके हिस्से में नहीं के बराबर हैं। इस लिंग भेद को कम करने में महिला संगठन सक्रिय रूप से लगे हुए हैं।

स्त्रियों को साथ लेकर चलने में संगठनों की सफलता के ठोस कारण हैं:—

- स्त्रियां अधिक जिम्मेदार होती हैं।
- वे नये विचारों और नई बातों को अपने तक सीमित न रखकर फैलाती हैं।
- उनमें परिवार की स्थिति बदलने की इच्छा ज्यादा होती है।
- वे अपने सब साधन और कोशिशें परिवार की भलाई के लिए लगाने को तैयार रहती हैं। □